सियारामशरण गुप्त रचनावली

सम्पादकः ललित शुक्ल

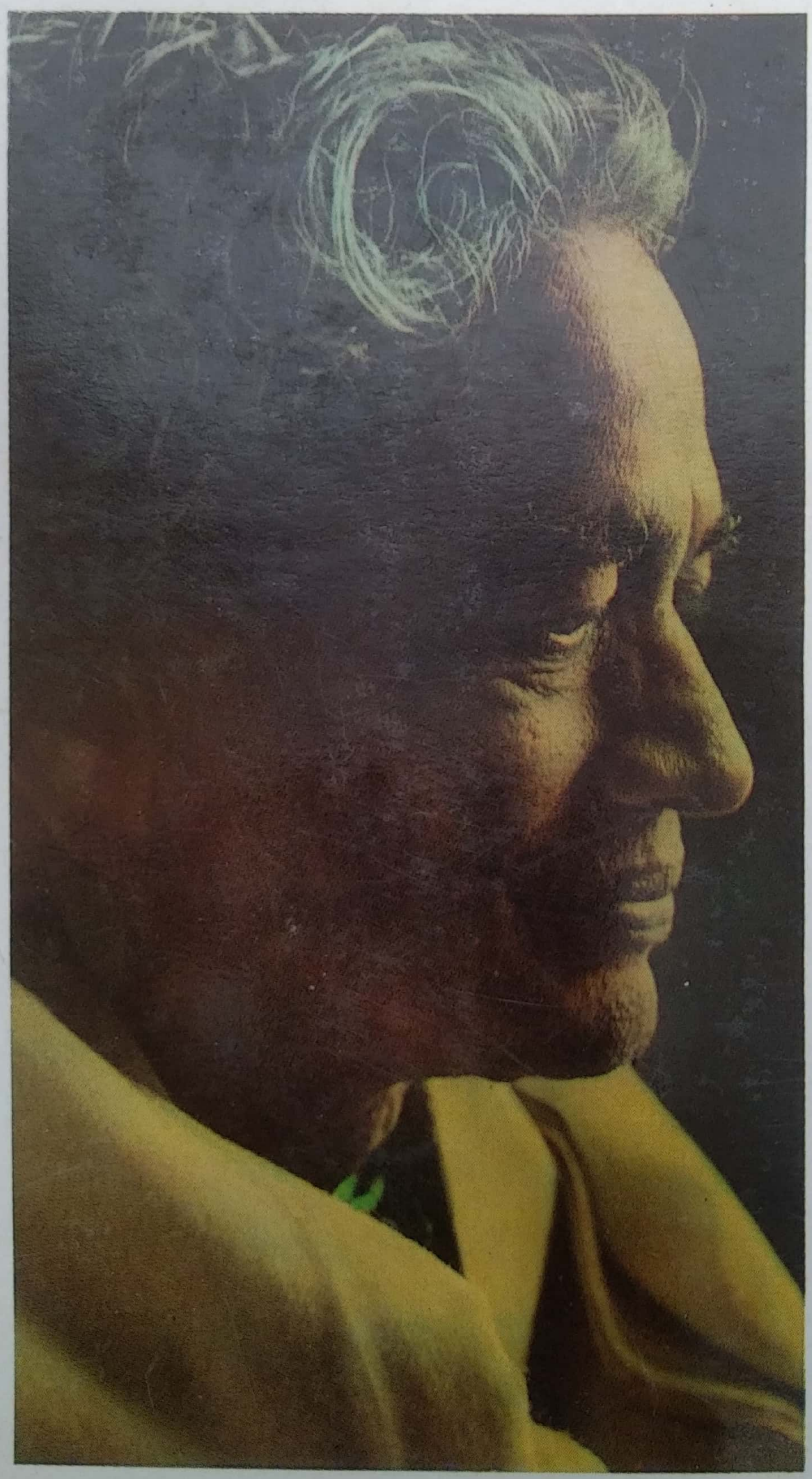

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली ।।

4

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली

सम्पादक : ललित शुक्ल

खण्ड चार

[झूट-सच, फुटकर लेख, बुद्ध-वचन, गीता-संवाद, दि क्रॉस बियरर]

Scanned with OKEN Scanner

ISBN—81-7016-091-X

कापीराइट एवं प्रकाशक : साहित्य सदन, झाँसी

एकमात्र वितरक
किताबघर
24/4866, अंसारी रोड
दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
एक हज़ार रुपये (पाँच खंड)

मुद्रक
चोपड़ा प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

SIARAM SHARAN GUPT RACHANAWALI (Hindi)
Edited by Lalit Shukla
Price : Rs. 1,000.00 (Five Volumes)

Scanned with OKEN Scanner

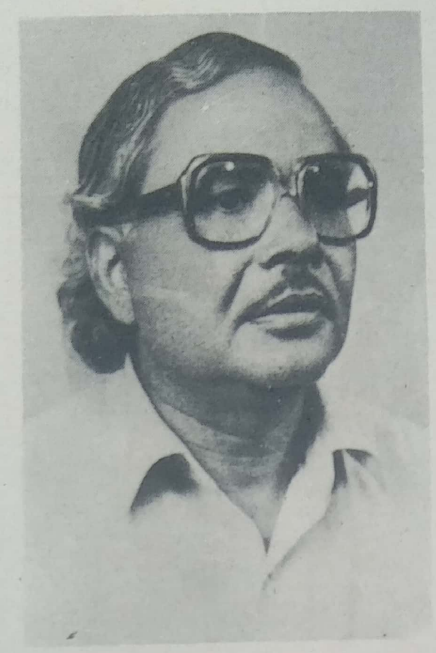

ललित शुक्ल हिन्दी साहित्य के एक ऐसे महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं जो मानव-जीवन के यथार्थ को साहित्य का मुख्य आधार मानते हैं। कविता के क्षेत्र में इन्होंने स्वप्ननीड़, समरजयी, त्रयी 1, अन्तर्गत, सहमी हुई शताब्दी और सागर देख रहा है नामक कृतियों से अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। धुँधलका और आँच के रंग जैसे कहानी-संकलनों में अभिव्यक्ति के नये धरातल सामने आए हैं। दूसरी एक दुनिया और शेष कथा के आत्मीय रचाव की भंगिमा अत्यंत मुखर है। सोज़ालोबो और पार्वती के कंगन बहुचर्चित रिपोर्ताज़ संकलन हैं। नया काव्य : नये मूल्य एवं सियारामशरण गुप्त : सृजन और मूल्यांकन आदि समीक्षा-कृतियों में रचनात्मक समीक्षा की बानगी उभरी है। सियारामशरण गुप्त रचनावली का संपादन उनकी साहित्य-यात्रा की मानक उपलब्धि है।

सम्पर्क : शांतिद्वीप, 4 वाणी विहार, उत्तमनगर
नयी दिल्ली-110059

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली

आर ऐसे न उठो य—
तुम चिरन्तन सारथी ये हँस रहे,
रास है रथ की तुम्हारे हाथ में।
शरण हूँ मैं, दे रहे उद्बोध तुम!
तो वही उद्बोध फिर से सुन सकूँ —
"छोड़कर सब धर्म आ मेरे शरण,
सर्व पाप विमुक्त कर दूँगा तुझे!"
कह सकूँ सुनकर असंशित — हे हरे!
जो कहा तुमने, करूँगा मैं वही।

— सियारामशरण गुप्त